Research Paper | Political Science | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 6 | Issue : 7 | July 2020

BIHAAREEGANJ KEE STHAANEEY SANSKRITI EVAN SAAMAAJIK PRSHTHABHOOMI KA EK ADHYAYAN

बिहारीगंज की स्थानीय संस्कृति एवं सामाजिक पृष्ठभूमि का एक अध्ययन

Shriya Suman

Research Scholar, Ph. D., Department of Political Science, B. N. Mandal University, Madhepura, Bihar, India.

ABSTRACT

वैश्वीकरण स्थानीय संस्कृतियों की उपेक्षा करता है ये सर्वविदित है और यह वैश्वीकरण प्रक्रिया उन्हें और अधिक फैलती विदेशी संस्कृति को आत्मसात करने के लिए मजबूर करती है। लोग अपनी पहचान खो रहे हैं, अपनी परंपरा और अपनी उत्पत्ति के बारे में भूल रहे हैं क्योंकि उन्हें आधुनिक दुनिया की जरूरतों के अनुकूल होना होता है। सांस्कृतिक उत्पादों में व्यापार का विस्तार विदेशी संस्कृतियों के लिए सभी समाजों के संपर्क को बढ़ा रहा है। हालाँकि राष्ट्रीय संस्कृतियों पर वैश्वीकरण के परिणामों पर कोई सहमति नहीं है। परन्तु स्पष्टत: देखा जा रहा है कि विदेशी संस्कृति के प्रति लोगों का संपर्क अपनी सांस्कृतिक पहचान को कम करता जा रहा है। इसका जीता जागता उदाहरण हमारे भारत के कई प्रांतों में वैश्वीकरण युग के पश्चात स्वत: ही परिलक्षित होने लगा।

संकेत शब्द: सांस्कृतिक संक्रमण, स्थानीय विशेषता, अभिलाक्षणिक पहलू, पारंपरिकता, बाजारीकरण

प्रस्तावना:

निश्चित रूप से वैश्वीकरण, विदेशी उत्पादों की उपलब्धता को बढ़ाने और पारंपरिक उत्पादकों को बाधित करना ही तो है। यह सांस्कृतिक उत्पादों और सेवाओं, जैसे फिल्मों, संगीत और प्रकाशनों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार भी बढ़ा रहा है। सांस्कृतिक उत्पादों में व्यापार का विस्तार विदेशी संस्कृतियों के लिए सभी समाजों के संपर्क को बढ़ा रहा है और विदेशी सांस्कृतिक वस्तुओं के संपर्क में अक्सर स्थानीय संस्कृतियों, मूल्यों, और परंपराओं में बदलाव आता रहा है। हालाँकि वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन और वितरण का वैश्वीकरण कई मायनों में एक स्वागत योग्य विकास है जिसमें यह उन उत्पादों तक पहुंच प्रदान करता है जो उनके पास अन्यथा नहीं होते। चिंता का विषय ये है कि वैश्वीकरण द्वारा लाए गए परिवर्तनों से स्थानीय रूप से निर्मित उत्पादों और उन्हें बनाने वाले लोगों की व्यवहार्यता को खतरा है। उदाहरण के लिए, बाजार में विदेशी खाद्य पदार्थों की नई उपलब्धता अक्सर सस्ती कीमतों पर स्थानीय किसानों को विस्थापित कर सकती है जो स्थानियता पे खतरा ही है।

बिहारीगंज के स्थानीय संस्कृति व समाज पर वैश्वीकरण का प्रभाव:

तृणमूल स्तर पर चर्चा करें तो यहां केन्द्रीय विषय वस्तु के रूप में अपने शोध अध्ययन के क्षेत्र का उल्लेख करूंगी, मेरा शोध प्रबंध बिहार के मधेपुरा जिलांतर्गत एक छोटे से ब्लॉक बिहारीगंज के सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक पहलुओं के क्षेत्र अध्ययन पर है। बिहारीगंज प्रखंड जिसे कलकत्ता के तत्कालीन जमींदार बिहारीलाल मित्रा ने बसाया था, जो वर्तमान में बिहार के मधेपुरा जिला के अन्तर्गत आता है। पूर्व में कोशी की मुख्य धारा 'हा-हा धार' का निर्जन क्षेत्र हुआ करता था। हालांकि बिहारीगंज को पूर्व मुरबल्ला नाम से जाना जाता था। लेकिन बाद के दिनों में जब बंगाल बिहारी लाल मिश्रा के हाथ में जमींदारी चली आयी तो मुरबल्ला का नाम बदल कर बिहारीगंज रखा गया। लेकिन तभी भी इसे निशंखपुर कुरहा परगना कहा जाता था। कालांतर में यहां सनै: सनै: शिक्षा और संस्कृति का विकास हुआ और आज यह एक सघन आबादी वाला संसाधनधनी क्षेत्र है। 19वीं सदी के वैश्वीकरण के युग से होता हुआ आज़ादी के बाद अब तक इस क्षेत्र में कई आमूलचूल परिवर्तन हुए। 22 जून 1994 ई से बिहारीगंज को प्रखंड का दर्जा दिया गया था। इसका उद्घाटन तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू प्रसाद ने किया था। पूर्व में यह अधिसूचित क्षेत्र भी रहा है। समय के साथ कई बार अपग्रेड और डिग्रेड हुआ। वर्तमान में बिहारीगंज नगर पंचायत बनने की सभी अर्हता पूरी करता है। पहले जहां नगर पंचायत बनने के लिए 75 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में लगी होनी चाहिए। जबकि नियमों में बदलाव कर अब 50 प्रतिशत कृषि कार्य में लगे हुए जगहों को भी नगर पंचयात का दर्जा मिलेगा। बिहारीगंज इस मानकों पर पूरी तरह से खरा उतरता है। यहां बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, जेनरल हाट, गुदड़ी बाजार, मोबाइल के आधा दर्जन से अधिक टावर, शहरी आधार पर बिजली विपत्र, भारतीय जूट निगम, बिस्कोमान, कृषि उत्पादन बाजार समिति, सरसों तेल मिल, छह राष्ट्रीय कृत बैंकों की शाखा, पोस्ट ऑफिस, दो कॉलेज, चार उच्च विद्यालय, दो गैस एजेंसी, दो सिनेमा हॉल, आवासीय होटल, धर्मशाला, मंदिर, मस्जिद एवं अन्य हैं, जो नगर पंचायत की अर्हता पूरी कर रही है। नगर पंचायत का क्षेत्र प्रस्ताव के अनुसार बिहारीगंज नगर पंचायत का क्षेत्रफल 2248.74 एकड़ में होगा। इसमें बिहारीगंज के 620.31 एकड़, विशनपुर के 647.38 एकड़, कुश्थन के 771.93 एकड़, बढ़ैया के 191.72 एकड़ और हथिऔंधा का मात्र 18 एकड़ भूमि शामिल किया गया है। बिहारीगंज नगर पंचायत के उत्तर राजगंज और लक्ष्मीपुर, दक्षिण गमैल और गोरपार, पूरब हथिऔंधा और पश्चिम मोहनपुर निस्फ और मोहनपुर चौमुख होगा। 1992.56 वर्ग किलोमीटर, जनसंख्या का घनत्व बिहारीगंज नगर पंचायत की जनसंख्या 2011 के जनगणना के अनुसार 23134 होगी। इसमें बिहारीगंज के 12157, बिशनपुर के 1357, कुश्थन के 7408, बढ़ैया के 1477 एवं हथिऔंधा के मात्र 735 लोग शामिल किये गये हैं। प्रस्तावित

नगर पंचायत की जनसंख्या का घनत्व 2532.87 वर्ग किमी होगा। इस भौगोलिक विस्तार के साथ यहां का सामाजिक परिवेश अपने स्थानीय विशेषताओं के अभिलाक्षणिक पहलुओं को भी समाहित करता है। जो कालांतर में वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में पाश्चात्य संक्रमणों के साथ स्वाभाविक रूप से प्रभावित भी हुआ। लघु व कुटीर उद्योग, स्थानीय विपणन उद्यम, क्षेत्रीय स्तर पर उपजने वाले फसल यथा जूट, मक्का, मखाना, धान की खेती व निर्यात का प्रभावित होना, स्थानीय कामगारों का बड़े शहरी की ओर पलायन इत्यादि। शहरी परिवेश में सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य अंग्रेजी शैली कुछ ज्यादा हावी हुई है, लेकिन अच्छी बात यह है कि देश के ग्रामीण परिवेश वाले क्षेत्रों में अब भी प्राचीन भारतीय संस्कृति का बोलबाला है उसकी नींव मजबूत है। लेकिन बाजारवाद के प्रभाव से वो भी अछूती नहीं रही हैं।

निष्कर्ष:

इस तरह यह कहा जा सकता है कि भूमंडलीकरण ने भारतीय समाज को कई रूपों में प्रभावित किया है जिसका प्रभाव भारतीय समाज में स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहा है। वैश्वीकरण के सामाजिक प्रभाव सबसे अधिक प्रभावी एवं स्थायी हैं। इसने संस्कृति को भी काफी गहरे रूप में प्रभावित किया है। इसके प्रभाव से भारत भर में स्थानीय परिवर्तन के साथ वेश-भूषा, खान-पान, संगीत, भाषा, विचार आदि क्षेत्रों में कई परिवर्तन देखने को मिलते हैं।

सुझाव:

बाजारीकरण, वैश्वीकरण व नई तकनीकी की ताकत को देखकर युवाओं में उसके प्रति आकर्षित होने की भगदड़ मची हुई है। लेकिन उस भगदड़ में भी हमकों ध्यान रखना होगा कि हम सामंजस्य बनाकर अपनी जडों से मजबूती से जुड़े रहें और इन जडों को मजबूत रखने के लिए हम सभी को समयानुसार ठोस कारगर प्रयास करते रहना होगा। वर्तमान में आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत लघु, कुटीर एवं मध्यम उपक्रम पर विशेष बल, भारत सरकार के पहल कारागार रूप से वैश्वीकरण के प्रभाव जन्य स्थितियों का उपचारत्मक हल होंगे।

संदर्भ:-

I. Bihar Tourism: Retrospect and Prospect Archived, Udai Prakash Sinha and Swargesh Kumar, Concept Publishing Company, 2012,

II. Revenue Administration in India: A Case Study of Bihar, G. P. Singh, Mittal Publications, 1993,

III. Prabhat Khabar Digital Desk, Oct 27, 2015

IV. Dainik Jagran Digital Desk, Jagran Prakashan Limited, 2020